अद्वैतखंडन.

छपावी प्रसिद्ध करनार

महाराज श्रीबिहारीलालजीनी आज्ञाथी

पंड्या दोलतराम किरपाराम.

नडीयाद मध्ये

डभाण भागोळे कुंभारपोळमां मेहेता सुरजराम

नथुलाले पोताना प्रेसमां छाप्युं.

संवत १९४१—सने १८८४

कीमत रु० ०—२—०

२३४४

अद्वैत खंडन.



ॐश्रीस्वामिनारायणाय परब्रह्मणे नमोनमः॥ सदेवसौम्येदमग्र आसीदेकमेवा द्वितीयं ब्रह्म ए आदिक जे ब्रह्मने कहेवावालि श्रुतियो तेनो अनुभवे रहित जे आधुनिक ज्ञानी ते सजातीय विजातीयने स्वगत भेद रहित ब्रह्म छे एवि रित्ये अर्थ करेछे तेमां मोटा मोटा बाध आवेछे ते कहिये छैये जे ब्रह्म शब्द थकि उत्तर जे एक वचन विभक्तिनु छे तेणे करिने ब्रह्म एक सिद्ध छतां एक पद शावा

स्ते आप्यु तो तु कहिश के सजा
तीय भेदनि व्यावृत्तिने अर्थे आ
प्यु छे तो अमे पुछीये छैये जे ब्र
ह्म सजाति भेद छे ने ते कियो ने
जो छे तो तेनि निवृत्ति केम थशे
ने जो सजाति नथि तो एक पद
व्यर्थ पडयुं तेम छतां एवकार शा
माटे आप्यो तो तमे कहेशो के वि
जातिय भेदनि नीवृत्तिने अर्थे क
ह्यो छे ते पण जो विजातीय भेद
स्वसिद्ध छे तो तेनि निवृत्तिने अ
र्थे कहि शकाय ते पण भेद नथी
तारे एवकार पण व्यर्थ पड्यो अ
ने अद्वितीय पद तो गुणवडे करि

ने पण सद्वितीय पणाने नथि स
हन करतु त्यारे त्यां पुछवानु के क
ल्याण गुणे रहित ने आनंद रहि
त एवा ब्रह्मनी सेवाथि शि तमारे
मते पुरुषार्थ सिद्धि थई?कांइ न थ
ई; शाथि केज्यारे ब्रह्ममां आनंद
नथि रह्यो त्यारे एने जाणनारने
ए आनंद क्यांथि आपशे?माटे ए
कांइ ब्रह्म निरूपण थयु कहेवाय
नहि, केम जे श्रुतिये सच्चिदानंद
एवुं ब्रह्म कह्युं छे,ते ज्यारे तमे स
त्य कहेता हो तो सांभलो, अमे
कहिये छैये जे सत् शब्दे करिने अ
विनाशिपणुं ए एक भेद ने चित्

शब्दे करिने प्रकाशपणुं ए बिजो
भेद ने आनंद शब्दे करिने सुख
पणुं ए त्रिजो भेद एवि रित्ये ए त्र
ण स्वगत भेद ब्रह्मने विषे आ-
व्या माटे ए भेदनि निवृत्ति कर-
तां तो सर्व शुन्यवाद सिद्ध थयो
अने तमे केशो जे एतो जडमि-
थ्या ने दुःखरुप एवि जे माया ते
थि विलक्षण ब्रह्म तेनां सच्चिदा-
नंद ए त्रण विशेषणछे तारे तेमां
आ आशंका छे जे ए त्रण विशे
षणरूप जे ब्रह्मनां लक्षण तेथि पृ
थक् ब्रह्म वस्तु शुंछे ते कहो, त्यांरे
तमे कहेशो जे ए ब्रह्म तो सच्चि-

दानंद धर्म छे त्यारे एमां आ आ
शंका छे जे ए त्रण धर्म एज ब्रह्म
छे के ए त्रण धर्म जेमां रह्या छे
ते ब्रह्म छे तारे तमे केशो जे ए त्र
ण धर्म जेमां छे एवुं ब्रह्म छे तारे
तेमां आ आशंका छे जे ए त्रण
धर्म जेमां रह्या छे ते धर्मि शुं व-
स्तुछे ने आ आशंका जे न जाणे
तेने बुद्धिमान न जांणवो एवि री
त्ये स्वगत आदिक भेद रहित प-
णा एमां एवाबहु बाध आवेछे ने
श्रुतिमां एम कह्युं छे जे एहष्टा ए
वुं जे ब्रह्म तेणे माया सामु जोयु
तारे ब्रह्म जे ते नेत्रवान थयु ने पो

ता थकि अन्य जे माया ते सामुं
जोयुं एम कह्यामां माया ने ब्रह्म
ए बे वस्तु सिद्ध थयां ए विजाती
य भेद थयो अने वाक्षि श्रुतिये
कह्युं छे जे ब्रह्म तेणे एम संकल्प
कर्यो जे हुं बहुरुपे थाउं ते ए वा
तमां ब्रह्म हृदयवान थयुं ने मन-
वालुं थयुं अने एवी रीत्ये जोवारू
प ने संकल्प करवारूप जे क्रिया
तेने करवे करिने क्रियावान ब्रह्म
थयुं ने जे क्रियावान होय ते मूर्त्ति
मान होय ने जे मूर्त्तिमान होय ते
एक देशमां रह्यो होय ते बिजा
स्थानमां रह्यो होय तेनि सांमुजु

वे अने तमे केशोजे एक ब्रह्मज छे
ते बहु जीवरूप थयुं छे तारे तेमां
पण आ मोटो बाध आवे छे जे
सदा ज्ञानवानने स्वतंत्र ने माया
ये रहित ने अक्षर ने निर्बंध एवुं
जे ब्रह्म ते बहु जीवरूप थयुं तारे
ए ब्रह्म अज्ञानि थयुं ने परतंत्र थ
युंने माया वेष्टित थयुं ने क्षरणा
वे जुक्त थयुं ने बंधने युक्त थयुं ने
एवि रीत्ये आज्ञानादिक दोष यु-
क्त थयुं जे ब्रह्म तेने जने करिने
अज्ञानादिक दोष केम टलशे अ
ने तमेकेहेशो, ए अज्ञानादिक दो
ष तो मायाने संबंधे करिने छे ए-

ण स्वतः सिद्ध ब्रह्ममां क्यां छे ता
रे तेमां अमे पुछीये छैये जे ए ब्र-
ह्मने मायानो संबंध ते स्वइछाये
थयो छे के पर इछाये करिने थयो
छे अने जो स्वइछाये करिने के'शो
तो ए अज्ञानादिक दोष करिने जे
सुख दुःखादिकनुं भोक्तापणु ते ब्र
ह्म पोत पोतानि मेले पोताने विषे
कर्युं केहेवाय तारे ए ब्रह्ममां बुद्धि
मानपणुं आव्युं केमजे जे डाह्यो
मनुष्य होय ते पोताने दुःख थाय
एम करतो नथि अने जो पर इछा
ये करिने के'शो तो ब्रह्म ते मायाने
आधिनथयुं पण स्वतंत्रनथयुं मा

टे माया सबल जे ब्रह्म तेने भज
ने करिने माया क्यांथि टलशे अ
ने भगवद्गीतामां कह्युं छे जे मारा
धामने जे पामे छे ते पाछो फरिने
आ संसारमां आवतो नथि ने
आतो अक्षर एवुं जे पोते ब्रह्म ते-
ज क्षरभावने पामिने बहु जीवरु
प थया ए मोटो बाध आव्यो अ
ने तमे केशो जे पोते ब्रह्म क्यां ब-
हुरूपे थयुंछे एतो जेम जले भरेल
मृतिकानां बहु पात्र तेने जोगे क
रिने एक सूर्य ते प्रतिबिंबरूपे बहु
जणायछे॥ तेम एक ब्रह्मछे ते अ
विद्यारूपे बहुपणाने पांमि जे मा

या तेने योगे करिने बहुरुपे जणा यछे तारे तेमां आ मोटो बाध आवे छे जे प्रतिबिंब तो जे सूर्यनि पेठे एक देशमां रह्यो होय तेनुंज केहेवाय पण जेनुं सर्वने विषे समपणे व्यापकपणुं होय तेनुं प्रतिबिंब न के'वाय माटे तमारे मते सर्वने विषे समपणे व्यापक एवुं जे एक अद्वितीय ब्रह्म तेनां बहु जीवरुपे प्रतिबिंब थयांछे एम नहि के'वाय ने प्रतिबिंब केहेशो तो व्यापकपणुं नहि केहेवाय ने वलि जल जेवुं ने काच जेवुं जे निर्मल पदार्थ होय तेने विषे एक देशी जे सूर्या-

दिक तेनां प्रतिबिंब घटे पण अंध
काररुप एविजे अविद्या माया तेने
विषे ब्रह्मनुं प्रतिबिंब न घटे ते सा
रु ए प्रतिबिंब वाद ते खोटोछे. अ
ने तमे केहेशो जे जेम आकाश छे
ते घटमटरूप उपाधिये करिने ब-
हुरुप जणाय छे तेम एक अद्वितो
य जे ब्रह्म ते कारण अव्याकृत
आदिक देहने योगे करिने जीव
ईश्वरपणे करिने बहुरुप थया ज-
णाय छे तारे ए वादने विषे ब्रह्मना
अद्वितीय पणानि हानि थाय ए
मोटो बाध आवे छे तथा ए दृष्टांत
ते सिद्धांत साथे मलतु आवतु न-

थि केवि रीत्ये तो एक आकाश बी-
जी पृथिवी त्रिजा पृथ्वी थकी थ-
या एवा घटमट ने चोथो ए घट म-
ट उपाधिनो करनारो कुंभार ए चा
र थयां तेमां आकाश जडने शुन्य
छे ने पृथ्वी पण जड छे ने पृथ्वीनां
कार्य जे घट मट ते पण जडछे ने ते
घट मटनो कर्त्ता जे कुंभार ते आ-
कारवानने चैतन्य छे अने एक अ
द्वितीय ने अकर्त्ता चैतन्य जे ब्रह्म
ते आकाशने ठेकाणेछे ने माया ते
पृथ्वीने ठेकांणे छे ने कारणने अ-
व्याकृत शरीर ते घट मटने ठेकांणे
छे ने चोथो ए घट मटनो कर्त्ता कुं

भार तेनि पेठे कारण ने अव्याकृत
शरीररूप उपाधिनो कर्त्ता कोण छे
ते तमे कहो ने जो न कहो तो एवा
द खोटो छे अने जो कर्मने माया
आदिक वस्तु तेने कर्त्ता केहेशो तो
ए कर्मने माया आदिक वस्तु तेतो
जड छे ते जडने विषे कर्त्तापणुं घ-
टे नहि अने तमे केहेशो जे जेम को
इ पुरुषने रज्जुने विषे सर्पनो भ्र-
म थाय छे. तथा छिपने विषे रुपा
नोभ्रम थायछे ने स्थंभने विषे चो
रनो भ्रम थाय छे तेम ब्रह्मने विषे
माया तथा जीव ईश्वररूप जगत-
नो भ्रम थाय छे तारे तेने विषे अ

मारि आ आशंका छे जे मनुष्य
ने रज्जुने विषे जे सर्पनो भ्रम था
य छे तेतो कोइ ठकांणे साचो सर्प
दिठो छे तेणे करिने थाय छे ने छि
पमां रुपानो ने स्थंत्र्भमां चोरनो
भ्रम थाय छे ते पण साचु जे रुपु
ने साचो जे चोर ते दिठा छे तो ते
णे करिने थाय छे माटे तमारे मते
मिथ्या ने कल्पित ने अवस्तु एवुं
जे माया जीव ईश्वररुप जगत् ते-
नो आरोपण रूप भ्रम ते ब्रह्म ते
ने विषे केम घटे ने जो कोइ स्थान
के माया जीव ईश्वर रुप जगत् सा
चु होय तो घटे अने वलि दृष्टांत-

मां तो पूर्वे दिठां जे सर्प रुपु ने चो
र ते साचांछे ने रज्जु छिपने ने स्थं
न्न ते पण साचा छे ॥ ने तेमने वि
षे सर्प रुपु ने चोर ते साचां छे ने
रज्जु छिपने स्थंन्न ते पण साचां
छे ने तेमने विषे सर्प रुपु ने चोर ते
मने देखवावाळो पुरुष तेपण सा
चो छे ने सिद्धांतमां तो तमारे मते
एक ब्रह्मज सत्य छे ॥ ने जगत् तो
मिथ्या छे ने जेणे ब्रह्मने ए
जगत् दिठु ते देखवावाळो पण मि
थ्या छे माटे ए दृष्टांत रु सि-
द्धांत साथे विरुद्ध छे ॥ ने ज्यारे त
मे दोषने असत्य मानिने भ्रमने

साचो मानो छो तारे अधिकरण
ने पण मिथ्या मानिने पण भ्रम
ने साचो मानो तारे तो तमारे ब्र
ह्मने पण मानवानी जरुर नहि
माटे तमारे मतेज तमारु बोलवुं
मिथ्या थयु ॥अने वलि तमे केशो
जे जेम एक चंद्रमाने विषे बे चंद्र
जणाय छे तेम एक ब्रह्मने विषे ज
गतरुप द्वैतपणु जणाय छे तारे ए
ने [illegible] तमारे मते मोटो बाध छे
शाथि [illegible] चंद्रने विषे जे बे चंद्र
जणाय छे तो देखनारा पुरुषना
नेत्रने विषे तीमिरादिक दोष छे ते
साचो छे तेथि तेने बे चंद्र जणाय

छे ॥ अने ब्रह्मने विषे अविद्याये
करिने द्वैतपणु जणायु ते अविद्या
पण तमारे मते मिथ्या छे ने देख-
नारो पण मिथ्या छे माटे ए दृष्टां-
त ते सिद्धांत साथे विरुद्ध छे अने
तमे केहेशो जे कनक ते जेम कुंडल
थायछे तेम एक एवुं ब्रह्मजेतेअंशां
शि भावे करिने जीव ईश्वरादिक
सर्व रूपे थयु छे त्यारे एने विषे प
ण आ मोटो बाध छे जे विकारवा
नने छेदवा योग्य एवुं जे सुवर्ण ते
नां कुंडल आदिक आकार तेतो घ
टे ने वलि ए आकार ते विजातीय
नथि ने ए आकारनो करनारो सो

नि न्निन्न छे तेम ब्रह्म तो निर्विका
र छे ने अछेद्य छे ने अकर्त्ता छे ते
विकारने केम पांमे ने विजातीयप
णे करिने जड मिथ्या ने दुःखरुप
जगत्रुपे केम थाय ने सोनिनी
पेठे विकारनो करनार कोण छे ते
माटे कनक कुंडल दृष्टांत पण त-
मारे मते सिद्धांत साथे न मल्यु ॥
अने वलि तमे एम केहेशो जे एक
ब्रह्म छे ते स्वईछाये जीवरुपे थयु
छे ॥ तो एने विषे पण मोटो बाध
आवे छे जे कोइक डायो मनुष्य
होय ते पण पोताने दुःख तेवि रि
त्ये पोते करतो नथि ने आतो स-

वेछ्न एवुं जे ब्रह्म तेज पोतानि इछा ये करिने पशु मनुष्यादिक अनेक जीवरूप थइने नरक चोराशिनु मोटुंकष्टभोगवेछे एवि रित्ये पोताने ज दुःखनु देनारु जे जगत् तेनु जे ब्रह्मने निर्माण करवुं ए ब्रह्मने विषे संभवे नहि अने तमो एम कहोछो जे ब्रह्मज सर्व जीवरुपे थयु छे तारे तेमां पण आ आशंका छे जे केटलाक ऋषिछे ते पोताना कल्याणने अर्थेकृछ्चांद्रायण इंद्रियोनु दमन तथा वेदाध्ययन श्रवण मनन निदिध्यास आदिक प्रयासने करे छे ते करबानुं शुं प्रयो-

जन छे केम जे ए करनारो ते क्यां
बिजो छे ए तो पोते ब्रह्मज छे एवि
रित्यना मोटा बाध आवे छे माटे
तमारो अंश अंशिवाद ते खोटोछे
अने तमे केशो जे ज्यां सुधि अ-
ज्ञान दशा छे तां सुधि जीव ईश्वर
माया गुरु शिष्य इत्यादिक जग-
त् साचु जणाय छे ने ज्यारे ज्ञान
थाय छे तारे तो एक ब्रह्मज सत्य
छे ने बिजु सर्वे असत्य छे तारे ए
मां अमे आशंका करिये छैये जे
साचा जे ज्ञानि पुरुष तेने एक ब्र
ह्म सत्यछे ने बीजु सर्वे तेमिथ्याछे
एवुं ज्ञान थयु छे के नाथि थयु अ

ने जो थयुछे एम केहेशो तो ते ज्ञा
नि पुरुषने शिष्य प्रत्ये उपदेश क
रवो नहि घटे केम जे उपदेश कर
वानि तो एम रीति छे जे आ हुं गु
रु ते ज्ञानी छुं ने आ शिष्य ते अ
ज्ञानि छे ने आवि रित्यना ज्ञान-
ने उपदेश करिने ए शिष्यना अ-
ज्ञानने हुं टालु एवो भेद साचोज
थायछे ने गुरुने तो एक ब्रह्मनु ज्ञा
न थयुं छे माटे सर्वेने ब्रह्मरुपेज दे
खे छे माटे उपदेश करवो नहि घ
टे ने एगुरुनेएकब्रह्मनु ज्ञान नाथि
थयु एम केहेशो तो अज्ञानि गुरु
ते शिष्यने शो उपदेश करे केमजे

जेम शिष्य अज्ञानि छे तेम गुरु पण अज्ञानि छे तारे तो गुरु शि-ष्य ए बेयने विषे समपणु आव्युं पण गुरुने विषे अधिकपणु न आव्युं माटे सर्व शास्त्रने विषे ज्ञानि गुरुनेज उपदेश करवानो अधिकार छे एम कह्युं आवि रीत्यने बाधे युक्त जे ब्रह्म निरूपण ते-ने मोटा कहे नहि ॥ ने पूर्वापर श्रुतियोना बाधे रहित जे ब्रह्म निरुपण तेतो शेषना अवतार जे रामानुजाचार्य तेमनु करेलु जे व्यास सूत्रनु श्री भाष्य तथा भगवद्गीता भाष्य तेमां छे तेने अनुसारे

अमे आ ब्रह्म स्वरुपनु निरूपण करिये छैये जे सर्व श्रुति स्मृतिने विषे ब्रह्म केतां सहज स्वभावे स्वरुपे करीने ने गुणे करिने मोटा एवा जे पुरुषोत्तम भगवान ते सदा दिव्य मूर्त्तिमान दिव्य विग्रह कर्या छे ने ए जे पुरुषोत्तम भगवान ते पोताना अक्षर धाममां रह्या थका पोतानि शक्तिये करिने सर्वे जीवने यथायोग्य कर्म फल देवाने अर्थे अंतर्यामि रुपे बहुपणाने पाम्या थका सर्व जीव प्रत्ये व्याप्या छे अने ए पुरुषोत्तम भगवान मायिक अवयवे रहित छे ने स

दा दिव्य अवयवे जुक्त छे अने पो
ताना तेज पुंज तेणे करिने ए मूर्त्ति
ढंकाणि छे ते सारु एकांतिक भ-
क्तिये रहित एवा जे केवल आत्म
ज्ञानि ते ए मूर्त्तिने देखता नथि मा
टे निराकार कहे छे अने एकांति-
क भक्तिये सहित जे भगवन्निष्ट
ज्ञानि तेतो तेजमां ए मूर्त्तिने देखे
छे माटे सदा साकार कहे छे अने
ए भगवानने विषे मायाना सत्वा
दिक गुण नथि माटे ए निर्गुण छे
ने ए भगवानने विषे सत्य संक-
ल्पपणु तथा निरतिशय ज्ञान ऐ-
श्वर्य तेज बल प्रतापपणु ए आ-

दिक अनंत कल्याणकारि दिव्य
गुण रह्या छे माटे सगुण छे अने
ए भगवानमांथि जीवने उपज्या
कहिये तो गीतामां ने वेदमां जी-
वने अजन्मा सनातनने नित्य क
ह्या छे ते घटे नहि माटे जीव मा-
याने पुरुषोत्तम भगवान ए त्रण्ये
अनादिछे ने ए भगवान्छे ते मा
याने जीवने मुक्त तेना नियंता छे
ने स्वतंत्र छे ने सर्व जीव छे ते मा
याये करिने बंधाणा छे ने परतंत्र
छे अने ए जे भगवान ते दयाये क
रिने जीवना कल्याणने अर्थे युग
युगने विषे रामकृष्णादिक अव-

तारने धरे छे ते भगवानने ज्यारे ए जीव भजे छे तारे मायाना बंध नथि छुटिने सच्चिदानंदमय एवि भागवति तनुने पामिने भगवानना धामने पामे छे ने अखंड भगवाननि सेवामां रहेछे ने फरिने काळने कर्मने माया तेमने आधिन थता नथि॥एवि रीत्ये सर्व वेद पुराण स्मृतियोनो सिद्धांत छे॥॥

॥पदरागगर्बि॥ अक्षरधामथिआवियासहजानंदस्वामि॥ अगणितमुक्तनेक्षावियासंगेबहुनांमी॥ १

॥आविवश्यागढपुरमांप्रभुभवभयहारि ॥करिकृपाअदभूतनेतार्यां

नरनारि ॥२॥ पुरूषोत्तमनावास-
थिपुरिशोभेछेसारि ॥ अखंडरया
अलबेलडोआविदेवमोरारि॥३॥
एपुरिअक्षरधांमथिनहिनुन्यलगा
र ॥ कृष्नानंदकेकृपाकरी रियासु-
खदातार ॥४॥ पद १ ॥ एपूरिमांए
कस्थाननुंअक्षरभुवनछेनाम ॥ ते
मांअतिशेप्रीताथिपोतेरियाघनश्यां
म ॥१॥ आगल्यएकआगारछे सु
दरशोभीतुंसार ॥श्वेतद्विपपतिशा
मलोपधराव्यातेठार ॥१॥ महामु
कएकआपनो जेनेशांमसुंस्नेह ॥
श्रीहरीनीसत्ताकारणे धर्योछेव
नोदेह॥३॥चोकसुंदररालियामण्

अतिओपेअनुप ॥ कृष्नानंदके कृपानिधिकेरेसत्नाअनुप॥१॥पद २॥ एहभुवननेआगारएबरोबरच केवाय ॥ नुन्यनाहिएकएकथीसम तुल्यलेवाय ॥१॥ सर्वोपरिजेश्रीह रिइश्वरअवतारि ॥ गोपिनाथरू पेबनिवशियागीरधारि ॥२॥ देव तिरथनेजक्तमांफरेतेसंगलाय ॥प णगोपिनाथनिरख्यातणुंपुन्यअ धिकगणाय ॥३॥ लक्ष्मिबागमां मावनुंमंदिरनाहिनुन्य ॥ जगन्नाथ नीजात्राथकिथायसोगणुंपुन्य ॥ ४॥ दुर्गपुरिनीनिंदाकरेतेमहापंच पापि ॥ कृष्नानंदकेकृतांततेनेमा

रेदुखआपि ॥५॥ पद ॥३॥ घणुंरि
यागढपुरमांविजेरीयालगार॥ गा
ढोअवस्थाएस्थलमातेनोकउंनि
रधार॥१॥सतावनेबेठागादियेजेत
पुरनमांइ॥ पछेफरस्याछेसोरठमांप्र
भुजनसुखदाइ॥२॥सोरठकछगुर्ज
रनेकाठियावाडकउं ॥ सातवर्षसु
धिशांमलेसुखआप्यांछेवउ ॥३॥
सोरठदेशमां शांमलेकरयां उत्तम-
कांम ॥ कृष्नानंदकहेकउतेहगांम
नानांम॥४॥ पद॥४॥लालितअति
पुरलोजनेआखुंपिपलाणुं॥ मांग-
रोलमाणावद्धनपंचाणुंवखांणुं ॥
१॥ मेघपुरअगत्राइनेकउकालवां

णि॥ एसरवेगांमउपस्येवालेबउद
याञांणि॥२॥ महोत्सवमांगरोल
मांपिपलांणेचोराशि ॥ ञगत्राइ-
ञापेकस्योउत्सवञविनाशि॥३॥
पंचातिरथिमांप्रेमसुंसोजननेजावुं
॥कृष्नानंदकेकउंनाकिञोझतमां-
नावुं॥४॥पद॥५॥धन्यधन्यभुमिए
हछेपिपलाणानिञारि॥जियांरा-
मानंदस्वमीनेमल्याञवतारि॥१
॥जेमछापैयाछेजन्मनुंतेमादिक्षाने
गादि॥पांम्यापोतप्रथमातियांमाटे
तिरथञादि॥२॥पांम्यादिक्षापि-
प्पलमांजेतपरञानिशेक ॥ निञ
निनगांमबेयछेएमजांणोविवेक॥

३॥ जातांवलतांजनसौमलिजेतपु
रमां जाज्यो ॥ पछेकरिपंचतिराथि
सौत्र्प्रोझतमांनाज्यो॥४॥सातवर
ससोरठमांवाशियात्र्प्रविनाश ॥ क्र
ष्नानंदके क्रपानिधियेकर्योगढडे
वास॥५॥पद॥६॥ संवत्‌त्र्प्रढारचो
सठमांवासुदेवनेस्थाप्या॥पुजवा
प्रेमीजननेवालेमहानिधित्र्प्राप्या
॥१॥ प्रथमदेवपधरावियाथावाज
नपरायण॥ माटेएहनुंनामछेत्र्प्रा-
दिनारायण॥२ ॥ त्र्प्रोपेछेत्र्प्राधिक
त्र्प्रोरडारुडोशोभ्नेछेचोक॥दर्शनेद
शाविदेशाथिघउत्र्प्रावेछलोक॥ ३ ॥
चोकमांसुंदरशोभ्नतोदिशोलिंबत्र्प

पार॥ कृष्नांनदकेंकेशनांतरुमां
नेधिकार॥४॥पद॥७॥धन्यधन्यल
क्ष्मिबागनेवालेप्रख्यातकिधि॥वि
जांतटवृंदावननिपोतेउपमादिधि
॥ १ ॥ अनुपएउपवनमांएकबेठ
कसारि॥ त्यांबउनामीविराजता-
अखंडगिरधारि॥२॥राधाबागर
लियामणी ज्ञकिबागछेबिजी ॥
जुगलबागआतिजोडछेजीयांबउ-
फरयाश्रीजी॥३॥ गोकुलवृंदावन
निकहिउपमानजाय॥ प्रगटप्रभु-
ज्यां पधारियातेतोअधिककेवाय
॥४॥अखंडानंदमुनितणिशेवाअ
नसेकिधि॥कृष्नानंदवरआपियो

पुरिधरकारिलिधि॥२॥पद ॥८॥ व
लिकउन्नारतालपमां वालेवउकरि-
लिला॥ करेसमैयाशोच्चतासौजन
करिन्नेला॥१॥छापगोमातिरणछो
डजीवरतालमांस्थाप्या।गांमकर्युं
एहगादिनुं॥ वालेवउसुखत्र्प्राप्यां
॥२॥त्र्प्राज्ञाकरित्र्पालबेलडेसतसं-
गिनेबली॥छापलेोवरतालयमांह
रिजननेमलि॥३॥ पुजज्येष्ठमेसो
तमेत्र्पाचारजनेत्र्प्रावे॥ कृष्नानंद
केकृपानिधिएवित्र्प्राज्ञाकावि॥४॥
पद ॥९॥ त्र्प्राविनाशिनित्र्प्रागन्या
सौवेशिशचडावि॥ बारमासमांबे
वारसौकरेसमैयात्र्प्रावि ॥१॥पोते

प्रभुपणतेसमेवरतालयपधारे॥नि
र्वनारासउजननेअतिहर्षवधारे॥
२॥वालमजीयेवरतालयनेकरिदेश
वजिति॥लक्ष्मिनारायणदेवथीवर
तालशोभ्निति॥३॥वलीकउवरता
लयनेवालेलाडलडाव्यां॥कृष्नानं
दहरिकृष्नजीरमानाथपधराव्या-
॥४॥ पद ॥१०॥ प्रथमपंचोतेरमां
स्थाप्यानाथविशाला॥ दर्शनकरि
देवनांथियांजनसुखाला ॥१॥ ल-
क्ष्मिपति पधरावियावरतालयमां-
जारे॥ नरनारायणदेवनेउथाप्या-
तेवारे॥२॥नरस्थाप्याधरगांममां
नरायणछेजेह ॥ वरानपुरेबीजिया

पोतेअखंडएह॥३॥सतावनथिते-
छेतेरसुधिसमैयाकर्‍या॥कृष्नानं
दकेत्यांसुधितेनानिमनठर्‍या॥४
पद ॥११॥ छोतेरेसमैयाबांधिया-
बेउवरतालयमांइ॥बेउसमैयाउपरे
पोतेजइपाचेत्यांइ ॥१॥ छापसमै-
यानेगोमातिरेछे वरतालयदाडि ॥
माटेबिजेवेवाछापानिश्रीमुखेथि -
नापाडि॥२॥न्नाइश्रीरामप्रताप-
जीजेनेश्रीजीसुस्नेह॥वचनमानि
वालातणुंपाल्युंअखंडएह॥ ३ ॥
बारमासमांबेवखतआवेवरतालय
वलता॥कृपानिधिहरिकृष्नजीदइ
दर्शनमलता॥४॥अहोएवीवरता-

ळछेप्रसादिनिबउ ॥ कृष्नानंदवर
ताळनोमहिमा केटलोकउ ॥ ५ ॥
॥पद॥ १२॥महिमाअपरमपारछे-
वरताल्यनोवळी ॥ नवब्रह्मादेवा
धिशतेतेनेनशकेकाळि॥ १॥वाळेमा
रेवरताल्यमांगादिपातानिथापि ॥
दत्तपुत्रकरयादोयनेआचारजपद-
आपि॥२॥सभामंडपवरताल्यमां
सारोसोभेछेवाळि ॥ हरिमंडपहरि
कृष्ननोतेनुंसुंदरफळी ॥३॥ अति
उत्तमएचोकमांबेउपाटढळाविं॥कृ
ष्नानंदपाटउपरेदत्तबेसाड्याआ-
वि॥४॥ पद ॥ १३॥ दत्तबेपाटबेसा
रियावरताळनेमांड ॥हरिजनेमळी

पूजियानिराजनकरित्यांइ॥ १॥प-
छेकरीछेपेरामणिकडांहारश्रंबर ॥
अविनाशियेकरिश्रागन्याकरिपू-
जासुंदर ॥२॥ एविरित्येवरताल्य-
मांश्रापिदत्तनेगादि ॥माटेबंधवबे
यनुंस्थांनजन्मनुंश्रादि॥ ३॥जेमछे
श्रीजिनेजन्मनुंजेतपरापिपलाणुं॥
कृष्नानंदबेयबंधुनोजन्मवरताल-
जांणुं॥४॥पद॥ १४॥माटेतिरथमो
टुंठरयुंवरतालतेश्राति॥गला विपो
तगोमातिजियांश्रक्षरपति ॥ १ ॥
गोमतिसरोवरनेजारेगालवाजाय
॥सुंदरव्रक्षकदंबनोपोतेजैबेसत्यां-
य ॥२॥ विरहहतोएहव्रक्षनेपूर्वज-

न्मनोत्र्वारि॥सुखथयुंएनिछातिये
निरख्यागिरधारि॥३॥करिसेवा-
नथुबेमासिगोमातिमांत्र्प्रद्भुत॥कृपा
निधिनथुजेष्टनेकयाराधानासुत॥
४॥मल्यापोततेनेप्रितथित्र्प्राशाए
मनिपुरि॥कृष्नानंदरमानाथना-
थाप्प्यादासहजुरि॥५॥पद॥१५॥
वसिवरतालथिपूर्वमां छेबेत्र्प्रांबा-
त्र्प्रनुप॥तियांहिंडोलोबंधावियोझु
ल्याशांमस्वरूप॥१॥एहस्थलेत्र्प्र-
वतारीतेहरिजननेसंगे॥होजगला
विबेरंगनापोतरम्याछेरंगे॥२॥एह
गांमथिउत्तरमां बांमणोलिनीरां-
ण्ये॥पोतेप्रभुजिपधारियाहरिजन

निताण्ये॥ ३॥शत्यरइसइरासनेति
यांतुरंगफराव्या॥ दर्शनदेझनिज-
दासनेपाछावरतात्यत्र्याव्या॥४
॥रम्याजमाजियांश्रीहरितेतोवात-
त्र्यमुल्य॥ कृष्नानंदवरतासनेकरि
त्र्यक्षरतुल्य॥पद॥३६॥ ॥ ॥

समाप्त.